आनन्द प्रदाता मंत्र : णमो अरहंताणं

–डॉ. सोहनराज तातेड़

''णमो अरहंताणं''–मैं अरिहंत भगवान् को नमस्कार करता हूँ। अरिहंत=अरि+हंत अर्थात् दुश्मनों का नाश करने वाला मेरा भगवान् अरिहंत है। जीवन के बाह्य शत्रुओं को जीतने में हर्ष-शोक की अनुभूति होती है जबकि भीतरी शत्रुओं को जीतने में परम प्रसन्नता की अनुभूति होती है। हमारे भीतरी शत्रु हैं–क्रोध, मान, माया, लोभ। इनको जीतना यानि शाश्वत सुख की प्राप्ति करना। **शाश्वत सुख है – आनन्द। आनन्द की प्राप्ति हर प्राणी का अंतिम लक्ष्य है।** अरिहंत भगवान् जिन्होंने भीतरी शत्रुओं–क्रोध, मान, माया, लोभ को जीतकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हो गये। ऐसे भगवान् की अनुप्रेक्षा भीतरी शत्रुओं को जीतने में सहायक सिद्ध होती है। ''णमो अरहंताणं' एक शक्तिशाली मंत्र है, जो हमारे आभामंडल को पवित्र करता है। **''णमो अरहंताणं''** के स्पन्दन आत्मा के अध्यवस्तयों को शुद्ध करते हैं। ''णमो अरहंताणं'' का जाप कृष्ण, नील, कापोत लेश्याओं का शोधन कर तेजो, पदम, शुक्ल लेश्या में परिवर्तित करता है। अरिहंत भगवान् अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख (आनन्द) एवं अनन्त वीर्य (Infinite knowledge, infinite perception, infinite bliss and infinite energy) के धनी हैं। ज्ञान केन्द्र पर श्वेत रंग का ध्यान करने वाला व्यक्ति अर्हत् बनने की ओर प्रस्थान करता है। अर्हता प्राप्त करने के लिए अर्हत् को साध्य बनाना आवश्यक है। जब साधक का साध्य से तादात्म्य हो जाता है तो साधक साध्य की अर्हता प्राप्त कर लेता है। ठीक इसी प्रकार अर्हत् के साथ तादात्म्य जोड़ने वाला साधक पराकाष्ठा पर पहुँच कर स्वयं अर्हत् बन जाता है। **आगमवाणी में बताया गया है कि अरिहंत स्मरण बिना मुक्ति नहीं होती।**

भगवान् महावीर ने कहा–**''अप्पणा सच्च मे सेजा, मेत्तिं भुए सु कप्पये''**। स्वयं सत्य खोजो, सबके साथ मैत्री करो। जो व्यक्ति स्वयं सत्य खोजता है, धीरे-धीरे अपनी अर्हता को बढ़ाता जाता है। जब हम बुद्धि से परे प्रज्ञा के जगत् में प्रवेश करते हैं तो सारी आत्माएँ एक समान नजर आती हैं। प्रज्ञा जगत् में जाने पर हर आत्मा अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनंत आनन्द व अनंन्द वीर्य युक्त अनुभूत होती है। लेकिन अलग-अलग प्रकृति, स्थिति, अनुभाग एवं प्रदेशात्मक आठ कर्मों से आवृत्त होने के कारण हर आत्मा का विकास भिन्न-भिन्न होता है। आठों ही कर्म आत्मशक्ति को अवरुद्ध करते हैं। इनमें से कुछ कर्म शुभ, कुछ अशुभ है लेकिन अर्हत् बनने के लिए शुभ व अशुभ दोनों को छोड़कर शुद्ध (अकर्म) अवस्था को प्राप्त करना होता है। जैनाचार्यों ने पुण्य को सोने की बेड़ी तथा पाप को लोहे की बेड़ी माना है। लेकिन मुक्ति को प्राप्त करने के लिए दोनों बेड़ियाँ अर्थात् पुण्य व पाप दोनों का क्षय करना आवश्यक है। **मुक्ति की अवस्था आनन्द की अवस्था है।** ''णमो अरहंताणं'' मंत्र पाप व पुण्य दोनों बेड़ियों को काटता है। नवकार मंत्र का पहला पद **''णमो अरहंताणं''** सर्व सिद्धि दायक है। शाश्वत आनन्द की प्राप्ति अपने आप में सर्व सिद्धि है।

जैन दर्शन आत्मा का दर्शन है। भगवान् महावीर ने कहा—आत्मा है, आत्मा नित्य है, आत्मा कर्मों की कर्त्ता है, आत्मा कर्मों की भोक्ता है, कर्मों से छुटकारा पाया जा सकता है तथा सर्व कर्मों से मुक्त होना मोक्ष की स्थिति है। जो भगवान् महावीर की इस वाणी में विश्वास करता है, श्रद्धा करता है, वह सम्यक्दर्शन को प्राप्त होता है। सम्यक् दर्शन आत्म विकास की पहली मंजिल, पहला पड़ाव है।

''णमो अरहंताणं'' को आत्मसात् करने वाला सम्यक्दर्शन को प्राप्त होता है। ''णमो अरहंताणं'' का सार विश्व की सभी समस्याओं का समाधान देता है। अगर कोई ''णमो अरहंताणं'' के एक-एक शब्द के अनन्त-अनन्त पर्यायों का अनुसंधान करे तो यह सत्य उद्घाटित हो सकता है कि यह मंत्र शाश्वत आनन्द का प्रदाता है। ''णमो अरहंताणं'' सत्य है, शिव है एवं सुन्दर है। **यह सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् की त्रिवेणी है।** ''णमो अरहंताणं'' से अपने आपको एकाग्रता से भावित करनेवाला पूर्णता को प्राप्त होता है। सिद्धि के फल प्राप्त करने के लिए अपने आपको भावित करना चाहिए। अगर साधक ज्ञान केन्द्र पर चमकते सफेद रंग की पट्टी पर ''णमो अरहंताणं'' का मानसिक ध्यान कर अनुभव करे कि श्वास के साथ सफेद रंग के परमाणु शरीर के भीतर प्रवेश कर रहे हैं। सारा शरीर सफेद रंग के परमाणुओं से भर गया है। सफेद रंग शुक्ल लेश्या का प्रतीक है। ज्ञान केन्द्र पर ''णमो अरहंताणं'' की चमकती सफेद पट्टीसे अपने आपको भावित करने वाली आत्मा शनैः-शनैः स्वयं अर्हत् बनने की ओर प्रस्थान करती है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ अपना प्रवचन प्रारंभ करने के पूर्व णमो अरहंताणं, णमो अरहंताणं, णमो अरहंताणं—तीन बार एकाग्र होकर उच्चारण करते हैं। इस उच्चारण से वे अपनी आत्मा को भावित करते हैं। इस प्रकार भावित होने पर जो प्रवचन किया जाता है, वह सारा ज्ञान अतीन्द्रिय चेतना से प्रवाहित होता रहता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ की वाणी अपने आपको भावित करने के कारण श्रोताओं को सत्य, गहन ज्ञान एवं आनन्दमयी अनुभूत होती है। आपकी वाणी जनता को सम्मोहित करने वाली है। अतीन्द्रिय चेतना से आने वाला ज्ञान का प्रवाह श्रोताओं को हर्ष विभोर कर देता है। जब आचार्यश्री महाप्रज्ञ अपने आपको भावित कर किसी विषय का प्रतिपादन करते हैं तो श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। यह ''णमो अरहंताणं'' का जीता जागता प्रभाव हमारे सामने हैं। **''णमो अरहंताणं''** मंत्र का निष्ठा से स्मरण करने वाले कई प्राणी मोक्ष को प्राप्त हुए हैं तथा अनेक प्राणी मोक्ष को भविष्य में प्राप्त होंगे।

अरिहंत भगवान् चतुर्विध संघ की स्थापना करते हैं, जिसके घटक हैं—साधु, साध्वी, श्रावक एवं श्राविका। तीर्थंकर केवलज्ञान को प्राप्त करने के पूर्व स्वानुकम्पी होते हैं जो केवल अपने आत्मोत्थान का ध्यान रखते हैं। लेकिन तीर्थंकर बनने के बाद वे परानुकंपी हो जाते हैं। परानुकंपी का अर्थ—दूसरे के कल्याण की चिंता करना। इसको इस रूप में प्रतिपादित किया जा सकता हे कि **''णमो अरहंताणं''** मंत्र व्यक्ति को स्वानुकंपी से परानुकंपी बताता है। यह मंत्र स्वार्थ की चेतना का विकास कर उसे परमार्थ की चेतना में रूपांतरित करता है। परमार्थ से जीने वाला व्यक्ति प्राणी मात्र का हित चाहता है। किसी का अनिष्ट नहीं करता, सभी प्राणियों के साथ मैत्री करता है। उसमें सामुदायिक चेतना का विकास

होता है। **''णमो अरहंताणं'' एक जीवन का आदर्श है। जो व्यक्ति प्रात: उठते ही अपने आपको इस मंत्र से भावित करता है, पूरे दिन उसके सभी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं। ऐसा व्यक्ति सभी का प्रिय बन जाता है।**

यह मंत्र रोग नाशक है, शोक नाशक है तथा आनन्द प्रदाता है। इस मंत्र का स्मरण करने वाला तुरन्त नतीजे को प्राप्त होता है। जो ''णमो अरहंताणं'' को अपना इष्ट मानते हैं, तीर्थंकरों के अधिष्ठायक देव उनकी रक्षा करते हैं, उनको भौतिक लाभ देते हैं, सुख-समृद्धि देते हैं। **''णमो अरहंताणं''** का जाप वेदनीय कर्मों का शमन एवं शोधन करने वाला है। यह मंत्र शक्ति प्रदाता है, ज्ञान प्रदाता है, दर्शन प्रदाता है तथा शाश्वत आनन्द प्रदाता है। ''णमो अरहंताणं'' की शक्ति में विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान निहित है। निष्कर्ष की भाषा में कहा जा सकता हे कि जो प्राणी अपने जीवन को ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्यमय बनाना चाहता है, वह एकाग्रता से ''णमो अरहंताणं'' का ज्ञान केन्द्र पर ध्यान कर अपने आपको भावित करे। जो शाश्वत आनन्द को प्राप्त करना चाहता है, वह **''णमो अरहंताणं''** मंत्र को धारण करे। शरीर का रोम-रोम ''णमो अरहंताणं'' मय हो जाये। अपने आपको इस मंत्र से भावित करने पर हम अपना सुरक्षा कवच बना लेते हैं, जो अशांति एवं आवेश को हमारे भीतर प्रवेश नहीं होने देता। आवश्यकता है **''णमो अरहंताणं''** के गूढ़ रहस्यों को अपने जीवन में जीएँ तथा इस मंत्र को आत्मसात् करें, तभी हमें अपनी अनुभूति हो सकती है। निष्कर्ष रूप में ''णमो अरहंताणं'' आनन्द प्रदाता मंत्र है। जीवन की अंतिम उपलब्धि आनन्द की प्राप्ति है। ''णमो अरहंताणं'' मंत्र परम सत्य को प्राप्त करने में सहयोगी बनता है।

❊ मानद सलाहकार, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय
लाडनूँ (राज.)

❊ मानद संयोजक, पारमार्थिक शिक्षण संस्था
लाडनूँ (राज.)